'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' की रस योजना -

'कालिदास के काव्य-नाटकों में आत्मा स्थानीय रस, अलंकार एवं ध्वनि के विशिष्ट प्रयोग देखे जाते हैं, जो अन्यत्र एक साथ सुलभ नहीं होते। 'वीरश्रृंगारयोरेकः' प्रतिज्ञा के अनुसार 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक का प्रधान रस 'संभोग-शृंगार' है। यद्यपि तृतीय से षष्ठ अंक तक इस नाटक में 'विप्रलम्भ-शृंगार' के भी दर्शन होते हैं। इसकी तुलना में प्रथम अंक से तृतीय अंक तथा अन्तिम सातवें अंक में पुनर्मिलन के रूप में 'संभोग-शृंगार' ही प्रखर है। इसके अतिरिक्त वीर, भयानक, अद्भुत, शान्त रसों का भी सहायक रस के रूप में यथावसर चित्रण किया गया है।

संभोग शृंगार - प्रथम अंक में दुष्यन्त जब सखियों के साथ आश्रम-वृक्षों को सींचती हुई शकुन्तला को देखता है तो सहसा उसके मुख से निकलता है - 'मधुरमासां दर्शनम्'। शकुन्तला के प्रति दुष्यन्त का यह प्रथम चक्षु अनुभाव का प्रतीक है, इसके आगे वह शकुन्तला की तुलना अन्तःपुर की सर्वसाधन-सम्पन्न रानियों से करता हुआ कहता है - इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः' और 'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्' अर्थात् यह शकुन्तला सौन्दर्य-साधन-विहीन होने पर भी मनोहारी है। दुष्यन्त शकुन्तला को ब्राह्मण कन्या समझकर आशंकित था, किन्तु जब उसकी अन्तःकरण प्रवृत्तियों ने उसे आश्वस्त कर दिया तब वह शकुन्तला को 'तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्' कहता है। अर्थात् वह हमेशा धारणीय रत्न

Scanned with CamScanner

है। इस प्रकार प्रथम से तृतीय अंक तक की कथावस्तु संभोग श्रृंगार प्रधान है, क्योंकि वह शकुन्तला की सखियों से कहता है — 'द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे' 'सखी च युवयोः' 'रथम्'। इसके आगे एकान्तक्षणों में वह शकुन्तला को गान्धर्व विवाह के लिए प्रेरित करता है। सखियों के चले जाने से घबड़ायी हुई शकुन्तला को आश्वस्त करने की दृष्टि से दुष्यन्त कहता है — 'संवाहयामि चरणाकुत पद्मताम्रौ।'

सातवें अंक में विगतशाप - प्रभाववाला दुष्यन्त अनाथ शकुन्तला की स्थिति पर दुःख व्यक्त करता है — 'वसने परिधूसरे वसाना नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः।' तदनन्तर दुष्यन्त शकुन्तला के उपेक्षा रूपी अपने अपराध की शकुन्तला से क्षमा प्रार्थना करता है और कहता है कि — 'उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणीयुगम्।' अर्थात् चन्द्रमा और रोहिणी के बीच में जैसे राहु आक्रमण कर दोनों का विछोह करा देता है और ग्रहण के हटते ही वे पुनः एक हो जाते हैं, वही स्थिति दुर्वासा के शाप की समाप्ति पर हम दोनों की हो गयी है —

सुन्दरि !

बाष्पेण प्रतिषिद्धेऽपि जयशब्दे जितं मया।
यत्ते दृष्टमसंस्कारपाटलोष्ठपुटं मुखम् ॥

विप्रलम्भ श्रृंगार — Contd.

Uma Pathak
Dept. of Skt.
B.A. Part II (Content)

Scanned with CamScanner